साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित
शिवमंगलसिंह सुमन शतवार्षिकी संगोष्ठी सम्पन्न

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के संयुक्त तत्वावधान में 20 जून 2016, सोमवार को शिवमंगलसिंह सुमन जन्म शताब्दी समारोह के अंतर्गत राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन शलाका दीर्घा सभागार में किया गया। संगोष्ठी का शुभारंभ सुमन जी के सुपुत्र अरुणकुमार सिंह, समालोचक धनंजय वर्मा एवम् साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने दीपदीपन एवं सुमन जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया। समालोचक धनंजय वर्मा ने अपने वक्तव्य में कहा कि उनके धरती के सरोकार बड़े प्रबल हैं। वे गहरे आवेग के कवि हैं। सुमन जी का विशिष्ट रश्मि वलय था। काव्य रूढ़ियों को तोड़ने का कार्य उन्होंने किया। उनकी कविता में क्रांतिकारी स्वछंदतावाद के स्वर हैं। वे समग्र मनुष्यता के कवि हैं।

विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सुमन जी 'आकाश गुरु' थे। अपनी धरती, प्रकृति और लोगों से उनका गहरा अनुराग था। साहित्य समाज का दर्पण मात्र नहीं है, वह समाज का निर्माता भी है। श्री अरुणकुमार सिंह ने सुमन जी से जुड़े संस्मरण सुनाए।

प्रथम सत्र - पंछी उन्मुक्त गगन के, सुमन जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित था, जिसमें प्रभात कुमार भट्टाचार्य की अध्यक्षता में सरोज कुमार, शैलेन्द्रकुमार शर्मा, मुकेश वर्मा ने आलेख प्रस्तुत किए। भट्टाचार्य ने कहा कि सुमन जी से जुड़ी कई स्मृतियाँ हैं। वे कई पीढ़ियों के प्रेरणा पुंज रहे हैं। सरोज कुमार ने कहा कि सुमन जी की कविता का दायरा व्यापक था। वे गहरे अध्ययनशील थे। सरोज कुमार ने सुमन जी पर एकाग्र अपनी कविता भी सुनाई। शैलेन्द्रकुमार शर्मा ने कहा कि सुमन के नाम-रूप का स्मरण आते ही औदात्य का एक विराट बिम्ब आकार लेता है। बहुत कम रचनाकारों को इस तरह जीवंत किंवदंती होने का सौभाग्य मिला है, सुमन जी उस विलक्षण कविमाला के अनूठे रत्न हैं। वे तमाम प्रकार की असहमतियों और विसंवादों के बीच सहज संवाद के कवि हैं। मुकेश वर्मा ने कहा कि सुमन जी का समुचित आकलन नहीं हुआ है। उनकी कविताएँ बहुआयामी हैं। उनका काव्य - स्वभाव सामंतवाद और पूंजीवाद के विरुद्ध है।

द्वितीय सत्र में डॉ. सुमन के काव्य में संस्कृति के स्वरूप पर विचार हुआ। सत्र की अध्यक्षता रमेश दवे ने की। आलेख पाठ निरंजन श्रोत्रिय, प्रमोद त्रिवेदी एवम् शोभना तिवारी ने किया। दवे जी ने कहा कि सुमन जी ने गहरे सांस्कृतिक बोध के साथ महान रचनाकारों का आस्वाद लिया था। उन्हें पढ़ते हुए युग - जीवन से साक्षात्कार का अनुभव मिलता है। श्रोत्रिय ने कहा कि सुमन जी के मन में स्वतन्त्रता का उजास था। अपने परिवेश से उनकी गहरी संपृक्ति थी। प्रो प्रमोद त्रिवेदी ने कहा कि सुमन जी राग के साथ आग के कवि हैं। वे तमस से प्रकाश की ओर ले जाने वाले रचनाकार हैं।

तृतीय सत्र में डॉ सुमन और वाचिक कविता की परम्परा पर चर्चा हुई। सत्र की अध्यक्षता मोहन गुप्त ने की तथा आलेख पाठ हरिमोहन बुधौलिया एवं श्यामसुंदर दुबे ने किया। गुप्त जी ने कहा कि भारतीय काव्य की परंपरा वाचिक रही है। श्यामसुंदर दुबे ने कहा कि आज भी आम जन में वाचिक परंपरा का महत्त्व बना

हुआ है। सुमन जी में गहरी लोक चेतना थी। सुमन जी ने उस परंपरा को नए युग में साकार किया। बुधौलिया जी ने सुमन जी से जुड़े कई संस्मरण सुनाए।

इस अवसर पर हरीश प्रधान, गोपाल शर्मा, राकेश ढंड, उर्मि शर्मा, शिव चौरसिया, पिलकेन्द्र अरोरा, अरुण वर्मा, श्रीराम दवे, निरंजन श्रोत्रिय, जफर महमूद, रफीक नागौरी आदि सहित अनेक साहित्यकार, संस्कृतिकर्मी और गणमान्य जन उपस्थित थे।

संचालन साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के सम्पादक कुमार अनुपम ने किया। आभार प्रदर्शन प्रो प्रेमलता चुटैल ने किया।